

धामानं यतीयं च यत् इच्छिच्छं सदृशं तपधनदमं गापंशिकाधञ्चतत् ॥ १७ ॥ नक्तु ४ स्वत ४ शुक्लानि ४ तन ४ पातलो ४
 मया ४ शुद्धि ४ कृष्ण ४ केनक ४ स ४ पिंगल ४ कर्षत्रय ॥ वरु ४ स्व ४ यथमगवना ४ यमवधी ४ पूर्व ४ साम्या ४ मयं दिन
 कत्रुताताद्वितीयं च वंशि ॥ २० ॥ ० तिथीवराह मिहिरुक्तो दृढज्ञातके रात्रिपते दाध्याय ४ यथम ४ ॥ १ ॥ का
 लात्मा दिनकृत्समस्तु हिमयुसर्वं कृत्वा कृत्वा जीवज्ञानसुखे गितश्च मदना ४ स्वदिनमत्सज ॥ राजानोत्र विणीत
 नृक्षितिमुक्तानेताकृमात्रावध ४ सूत्रिदानवपूजितश्च सविद्यो यश्च ४ सदर्थं शुक्ल ॥ १ ॥ ॥ हलि ४ सूर्यश्चन्द्रमा ४ ग
 तत्रभिर्हृन्नाविरुद्धावाधने ध्वन्युग ४ आगोवक ४ कृत्तदकावनय ४ काधमन्द ४ सूर्ययुगादसितश्च ॥ २ ॥ जीवा इमि
 ता ४ शुक्ल ४ नयुर्वचसां यती ४ शुक्ल ४ हयुसूत ४ सित ४ नृक्ष ४ जिवात्रादुक्तमायु ४ नसतश्च निस्वीवक ४ पययिमन्व
 इयलनवदं च लोकात् ॥ ३ ॥ नक्त्यामा एतन्नालोत्र विद्युर्नात्युवांरानकालोत्र ध्वन्यु ४ इव्यामीक्षु

नृ (नृ) नृ नृ ४१ आम ४ उका राक वि ४ कषु दह ४ ॥ ४ ॥ वधु स्मि मा ल ता ति न क रु नि त ४ या पी त वि शा वि ता
४ व द्यु म्भ मि रु क ग व द स वि का ४ सु यो दि ना थ ४ क मा त ॥ ५ ॥ या म द्या न वि रु क न हि त त म ४ सो न द्रु वि लू न य ४
क्री (वि रु क्री) न य ४ या पा व ध ४ ले य त ॥ ६ ॥ व ध स र्य म तो न य स का र्थो ष णं क लु का अ व ती न त्रा सु ध्र (वि ला
४ वि रि त्स्व य थ म न र्म णा नां व नि ना रु मि ल ता द य ४ क म ध ॥ ७ ॥ वि पा दि त ४ उ क उ नू क अ क्री णा व ध ४
(ध्र वि ला ता रु ना ध म ॥ व द्यो क्री जी वा रु सि ती क्री जा क्री य थ क र्म स ल्प न ४ रु क्मो सि ॥ ८ ॥ म धा वि म ल द क उ
नृ व द्यु यि ल य रु ति ४ स वि ता ल्प क व ४ त नू द हि त नू व द्वा त क रु ४ या रु ध्र ण णा म द वा क लु रु द क ॥
९ ॥ कु न द क त नू ल मू र्ति नू दाने ४ यो रि क ४ स व य ल रु ण म ध ४ वि रु वा क ग त रु स नू वि रु ४ यि
म नू मो नू ते के रु स रु रि ध्र ॥ १० ॥ द ह रु नू ४ वि ण ल मू र्ध रु क णा रु स ति ४ ध्र म ति ४ क लो म क ४ ११ ॥

ॐ ४ सुखीकाकवपुः ४ सुलोचनः ४ कलानिलात्मासितवक्त्रमूर्ध्वरुधिरः ॥ १० ॥ मन्दालसः ४ कपिलदृक्कणदीर्घग
ॐ ४ सुलक्ष्मिः ४ पद्मनाभकः ४ निलात्मा ॥ सायकसुगन्धगन्धः ४ कवसाचसुमङ्गलमन्दकचन्दकः ४ कसनश्री
मा ४ ॥ ११ ॥ देवान्मन्त्रिविद्वानकाशयनेक्षितकः ४ कमातवर्गसुलभः ४ कर्मिकरुतंमध्वं दृष्टपादितं ॥ ताम्रं
स्यात्तमधिहमयुक्तिनरुतान्यक्तुमूकायसीदेका ॥ १२ ॥ निर्विवादयः ४ गङ्गा ४ नैऋत्यादिवृद्धत्वा ॥ १२ ॥ विदध
निकाशवासवकवीमासाध्वसमाध्वरात्ता ॥ कदलीलवणस्त्रिका मिषतामधवास्तवकषायः ॥ १४ ॥ जी
वाजीववृक्षसिर्गदूतनयायकाविरोमा ४ कमादिन्दकविक्रशद्वितासुददा ॥ कर्पाविदवंमतम ॥ सखाकंसुददमि
काशरवनात्मान्यधीधर्मया ४ साध्वीसुखरुपा ४ सुलक्ष्मिः ४ विविनायेविश्राधादिति ॥ १५ ॥ ४ मन्दानिगोसमध्व ४
निजामिगालिगमावव ४ ॥ गीर्मांशुदिमनध्वि ४ रुधिरसुददो ४ सा ४ समाधीतग ४ ॥ जीवन्दुष्टदना ४ कुरुस्यसुददा

[illegible]

कयहयानितदादितीयध्यायः॥२॥ कत्रयहेमुवल्लिहिविलेधसोम्ये॥ कृधिवचुष्टयगततदवद
धध॥ चद्योपगधिनसरागसमाननूपंसत्वंवदद्यदिरवत्सविनिसंरू॥१॥ पायावलि॥ स्वरागम्॥ पात्र
धविवलाध्र(भाहनाथलग्नंवनिथानिसंरूकंदृष्टगपिविथानिमादि(धत॥२॥ किय॥ शिनाककुगलंठ
वाथयादागकंपुष्टसूना॥ पा(ध्वकृद्विस्तृयानांश्चथमदुमृक्षंसिकपूक्तमिलारुचु॥३॥ लम्भा
धकाकुहया(नकधधवर्नोत्वददलयूकविधाया॥ दृष्टासमानंसदसंख्याचलवावदत्सुत्रसंरूध्रष्ट॥४॥
(ग३का(धवलसंयुतनवाग्रहनयूकेचत्ररागकादथ॥ वृक्षांगकवाविहृगाल्लाम्बूजा॥ धनेध्रनन्दीक्षधया
गसंरूवा॥५॥ हात्रेदूसूनिनविहिविलेसुवृक्षांगायस्कुलतनूएवांगकत॥६॥ परदा॥ लम्भाकुहृकुलज

लक्ष्मणमुखावासावकनवतत्रव८मूलतोयक्राता॥५॥ नृक८सात्रानक्रमयतिनविर्गभस्त्रयसन८। क्षीना
येतांमुदहनकिनध८कंठकाद्यांश्चणम८। वागीधक्षोमरुलविहलानपुष्पदक्षांश्चधुक८। सिग्भानिन्द८कदूकवि
ट्यानरुमिपुणधदय८॥७॥ शुणधुणरुनृविर्नृकुरुमिर्नृकप्रातिदृक्षवियविर्नृमन्यथा। पत्रांघकेयावतिवि
च्युत८सकादवकिउल्यास्तनवस्तथाविष्ठा॥८॥ नृयाचार्यधावत्रादमिवदृशीदृहृकृतकेविआनिऊत्माया
मृगीय८॥३॥ कुरुन्दुरुउपातमासमारुर्वणतउपीनृदमनमुदीधितो नृगान्यल्लोसुधुएयुयुरुद्वितिननृ
संथागमयेतिकामिनी॥१॥ यथासुत्राणिमिथूनंसमर्तितयेवव्यामिथूनयथाग८। नृसुदृहालाकितसंयतसु
सत्रावन्ते८सविलासदास८॥२॥ नवीदुधुकावनिऊ८खणगधेयुत्रोलिकाधदयसंस्क्रितपिवा। एवत्यय

५३

यं विद्विजितामिमकनादिमांस्वविद्वन्मिदिवाहृत्ता ॥ ३ ॥ दिवाकृष्णकोपिष्टमाष्टसंक्रिणोनिधनन्दुनिधि
 तद्वियययात॥ पिष्टव्यमाष्टव्यससंक्रिणोयताव ॥ ४ ॥ अङ्गयुग्मर्द्धगतोतथा ॥ ५ ॥ ॥ ४ ॥ दिवाकनन्दो ॥ स्मनगोकुर्द्धक
 जोगदयदोपगलओषितांतदा। व्ययस्वलोमृत्त्यकनायगोतथादकदृष्टामनधायकल्यो ॥ ३ ॥ अतिलषाहेन
 दयर्द्धमसादिमनधमतिष्ठुदृष्टिसयातो। उययनागिसादितचयममीचिगलितोदुपतिष्ठसुदृष्ट ॥ ६ ॥ पायद्वय
 मथसक्तिगोत्रअन्दनवसोम्यवदितो ॥ युगपत्यथगववावन्देनानीगरुयुताविद्याद्यो ॥ १ ॥ कृत्र ॥ गणिनिच
 दुधल्लेनाद्वानिधनाधितकृत्। वध्वत्यगथा ॥ कृत्तार्क्यो ॥ क्री। धन्दोनिधनाययुववत ॥ ७ ॥ उदयास्तगथा ॥
 कृत्तार्क्योनिधनंममुक्ततवदकथा। मासाधियगोनिधी। उतत्कालंधवर्धसमादिनेत ॥ ८ ॥ अर्धकलनापगत
 ॥ ९ ॥ उदयद्वयिकाधयोक्तयस्वस्यदक्षितो ॥ १० ॥ उदीयतागत्रिगतध्यापकेसुखीतिगहोत्रविधानिनीक्षित ॥

॥ १० ॥ अरु कं पुर बांधक भूतलिलित शार्क यु विद्धति ॥ पंज समवद समां गत गते य (म) दूते या विर ॥ ११ ॥ अर्द्धक
विषमन रं गाने नितीव क अय (म) मि यं शंग सा वधवी द धात्र यम लो क्वनि प्र दै स्व क ॥ ११ ॥ विहाय ल
नी विषम दै ससू ॥ सो रायि पंज सम क रा विल ग्रात ॥ यो कं य हा धम वला य दी यं वा द्य ॥ १२ ॥ तो यं शंग गता वा
॥ १२ ॥ अथो न्यादि पन्थत ॥ १३ ॥ गति रवी यं शकि सो म्या वपिव को चा सम गदि ते सम सम व दौ द यं वस्ति तो ॥ य (म)
ऊर्द्ध गता ववी द्य ॥ गति रवी म्या त्म ऊ नै दै तो यं शंग गति ल ग्रात कि न ध ॥ १४ ॥ क्री व आ ग ॥ १५ ॥ यो म् ॥ १६ ॥
युग्म च द्य गितो त (म) ए व न म्य ऊ व जी वा द या ॥ ल (म) च द्य निरी क्षि तो च सम लो युग्म व वा पा नि न ॥ क र्यु क मि
नं य हा द य ग तां शंग गता य धा ति सां (म) रू ति त पां रू गं ग का व ग्रा त युग्म गामि (म) ॥ १७ ॥ धन र्व न त्या क
सु गति विल ग्रा य रु रु द (म) प ग त व ल स्ते ॥ १८ ॥ व धा कि ता वी य य त न दृष्ट स कि प ह ता न्य यिका ग रं स्का ॥

य ४

१

॥ १३ ॥ कल घनां क ला हि च म्म गिरु च गत ॥ गित क ऊ जी व सृ य च द्य कि व धा ॥ १४ ॥ य न त ॥ १५ ॥ उ द अ च द्य सृ य ना था
॥ १६ ॥ क म गं दि ता ए व कि ॥ १७ ॥ उ रं च मा सा धि य त स द र्प नि का ॥ १८ ॥ ए ग रू वि व ले क यं नि र्म स्वां कि रु क दि यु (म) य ता
ए व ता ॥ अ वा न वि द्य व धु रं त स म्मि (म) ॥ १९ ॥ उ रं दि ता अ क र त गि रं वि वा त ॥ २० ॥ सो म्य द्वा (म) वि रु त्र धि नो व स्त द
को (म) जा त ॥ २१ ॥ क ऊ ॥ २२ ॥ गति रवी यं शकि सो म्या वपिव को चा सम गदि ते सम सम व दौ द यं वस्ति तो ॥ य (म)
॥ २३ ॥ गति रवी यं शकि सो म्या वपिव को चा सम गदि ते सम सम व दौ द यं वस्ति तो ॥ य (म)
द य (म) घे द का (म) ॥ २४ ॥ पा य य त न दृष्ट स कि प ह ता न्य यिका ग रं स्का ॥ २५ ॥
य न र दि त ॥ २६ ॥ सो म्या सो म्य ॥ २७ ॥ स वे द्य द ला च न ॥ २८ ॥ य य गृ ह ग त अ द्य वा मं दि त स्य प नं र वि नं उ र ग दि ता या ग म य

२ (म)

कु ३

व्याहृतिरुक्तं ॥ २० ॥ तत्कालमिदं संहितादिनसांगकायसुखं त्रासिमहितं ॥ पुनरुक्तं ॥ गणकं । या
 वानदीदिनसांगिसमानरागसुखं तदितनि ॥ २१ ॥ उदयति मृदुतां ॥ सफमसुखं वि
 मदेयदिहवतिनिधक ॥ सुतिनदं यथैषागणिनि ॥ विधनवंदादधनकृत्यानिगदितमिदं विखं सुतिका
 साधियकं ॥ २२ ॥ ॐ व्याचर्यधीवनाहमिहिनकतोदरुकातकनिधकाश्चयैधुर्थ ॥ ४ ॥ पिउर्जातय
 कस्यलभमिदावयधति । विदगसुखचलं मथाडुष्टदिवाकने ॥ १ ॥ उदयसुखिवामन्देकुरुवास्तं समा
 गतं । हितं वाके ॥ कृपानाथे गणकसुतं कथा ॥ २ ॥ गणकं पापलयेवाष्टिकगणितगणो ॥ गुरु
 ॥ सायस्तिर्जातं ॥ सूर्यसुदृष्टिगणिव ॥ ३ ॥ चउपगतगणो ॥ गणवीर्यसमन्वितं ॥ दितमूखं ॥ यमलो ॥

वत ॥ कावस्थितो ॥ ४ ॥ कागमिदं वृषल ॥ नतस्ते सोत्रथवाकुरु । नार्थं सट ॥ गणकं कायतनालयेष्टितं ॥
 ॥ नलभमिदं चउरनिनीकृतनवागणकं नवितासमागतं । सपायको ॥ कं वयुताथवा गणीयत्रयजातं प
 ददन्तिनिधयात ॥ ५ ॥ कुरुकं गताच ॥ गणनोसूर्याधूननवात्मरुक्षितो ॥ वदसुपिताविदगण ॥ त्ववात्राणि
 वधदधयधि ॥ ६ ॥ पूष्टुगणिधिसुतासि ॥ गसोथलनगतं ॥ सुखाल ॥ गुरुलेकसु ॥ गणिव ॥ चउपातग
 तायसुयत ॥ ७ ॥ आथादयमायग ॥ गणीसंपुष्ट ॥ समं वक्तुं यवामेधूनवल ॥ नवंधुग ॥ स्यात्सति ॥ गलिल
 नगसुय ॥ ८ ॥ उदयारूपार्थस्ति ॥ यथुक्तापापनिनिधयम । नलिककियुतविल ॥ न ॥ सोत्रगातकने
 दितं इव ॥ १० ॥ मं दुगते विलन ॥ गवधसोत्रनिनीकितोकमात । कीजाहवनसुनालयसायनरुमिधरुस

वादिहारा ॥ ११ ॥ नृलभ्यदणीक्षितिक ४ भूभनत्रया ४। गन्धुयत्रग्निरुषा। प्रविर्नत्रेन्द्राम (ग) कूले वृषि ल्या
 लयकू ४ पेदवंकत्राति ॥ १२ ॥ नार्धंनसमान (ग) चलन (ग) त्रिस्मचत्र हिलयदृ। स्वर्दीनगर्तस्वमन्दिनेवल
 याभारु लमंनकर्कआ ॥ १३ ॥ नार्ककत्रासुिका (ग) चट्टे न वविहृश्रगेभया ॥ १४ ॥ मत्राक्रमनिष्ठादी
 द्योय ४ सखवांशस ४ स्मृता ॥ १४ ॥ पायकि तेदुहिन गवदथकऊ ४ खकाविनध्रिक क्राककत्रासुथय
 । सोभ्यधियधतिगथाविधरुसुमति सोभ्यत्रययत्ररुसुगगायनाय ॥ १५ ॥ विहृमाहृदृदृमूतद्वलोक
 नृभलोदिषूनिच (ग) ४ छुहे ४। छुहे यदिनेकगतेसुवीक्षितल (ग) दृविजनयसूयगे ॥ १६ ॥ मन्दादी (ग) गनिनि
 दिवूकमन्ददृ

धर्मस्तव वज्राचार्यं सुरत श्री महाबिहार

II-123

८